दुर्लभता और सुलभता

बोधि की दुर्लभता और सुलभता का सम्यक् स्वरूप यह है कि जबतक सैनी पंचेन्द्रिय दशा की उपलब्धि न हो, तब तक तो बोधिलाभ महादुर्लभ है ही; किन्तु मनुष्य पर्याय में भी अनभ्यास के कारण दुर्लभ ही है, तथापि जो ठान ले, उसके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं, सब सुलभ है; पुरुषार्थी के लिये क्या सुलभ और क्या दुर्लभ ? सब सुलभ ही है; क्योंकि प्रत्येक भावना के चिंतन का स्वरूप पुरुषार्थ प्रेरक ही होता है। बोधिदुर्लभ भावना के चिंतन का वास्तविक स्वरूप यही है कि जबतक हम जाग्रत नहीं हुये, तब तक महादुर्लभ और आत्मोन्मुखी पुरुषार्थ के लिये कमर कसकर सन्नद्ध लोगों के लिये महा सुलभ है। **ह्न बारह भावना : एक अनुशीलन, पृष्ठ-157**

(पृष्ठ-20 का शेष...)

देखो ! पूज्यपादस्वामी धर्मी जीव का स्वरूप बताते हुय इष्ट उपदेश देते हैं ह्न

लोक में शक्ति की पूजा करो ह्न ऐसा कहा जाता है। वास्तव में तो अन्तर में विराजमान चैतन्यशक्ति की पूजा करने योग्य है। चैतन्य स्वयं ईश्वर है और उसका आश्रय लेने से हित होता है।

धर्मी को जबतक स्वाश्रय भाव नहीं होता, तबतक पराश्रय भाव नहीं छूटता है; अत: उसे भी भगवान की पूजा-भक्ति का भाव आये बिना नहीं रहता; किन्तु उस भाव से लाभ होता हो ह्न ऐसा नहीं है। उसको स्वाश्रय भाव है; अत: शुभभाव हो ह्न ऐसा भी नहीं है तथा शुभभाव है, अत: संवर निर्जरा हो ह्न ऐसा भी नहीं है।

ज्ञानी को निश्चय और व्यवहार दोनों ही होते हैं। उसे व्यवहार होता है, पर हेयबुद्धिपूर्वक होता है। जो जीव उसका निषेध करता है, वह तो तत्त्व का निषेध करता है। जबतक पूर्णता नहीं हो और मन का अवलंबन हो, तबतक शुभभाव अवश्य ही होते हैं। यदि कोई ऐसा माने कि धर्मी को शुभभाव होते ही नहीं है तो वह धर्म को नहीं समझता, उसकी दृष्टि ही झूठी है। उसे तत्त्व का वास्तविक स्वरूप ज्ञात नहीं है; अत: वह व्यवहार और निमित्त को नहीं समझता है। यही वस्तुस्थिति है। ●

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 25 286 अंक : 10

प्रवचनसार कलश पद्यानुवाद

(मनहरण कवित्त)

आतमा में विद्यमान ज्ञानतत्त्व पहिचान,
पूर्णज्ञान प्राप्त करने के शुद्धभाव से ।।
ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन के उपरान्त अब,
ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन करते हैं चाव से।
सामान्य और असामान्य ज्ञेयतत्त्व सब,
जानने के लिए द्रव्य गुण पर्याय से ।।
मोह अंकुर उत्पन्न न हो इसलिये,
ज्ञेय का स्वरूप बतलाते विस्तार से ।।६ ।।
जिसने बताई भिन्नता भिन्न द्रव्यनि से,
और आत्मा एक ओर को हटा दिया ।।
जिसने विशेष किये लीन सामान्य में,
और मोह लक्ष्मी को लूटकर भगा दिया ।
ऐसे शुद्धनय के उत्कट विवेक से ही,
निज आतमा का स्वभाव समझा दिया।।
और सम्पूर्ण इस जग से विरक्त कर,
इस आतमा को आतमा में ही लगा दिया।।७।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

प्रथम तो निश्चय ही होता है

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 41 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

ब्रुवन्नपि हि न ब्रूते, गच्छन्नपि न गच्छति।
स्थिरीकृतात्मतत्त्वस्तु, पश्यन्नपि न पश्यति ।।41।।

जिसने आत्मतत्त्व के विषय में स्थिरता प्राप्त की है, वह (पुरुष) बोलते हुये भी नहीं बोलता, चलते हुये भी नहीं चलता और देखते हुये भी नहीं देखता ।

(गतांक से आगे...)

धर्मी जीव को शरीर की स्थिरता के लिये भोजन का विकल्प उठता है तो वह भोजन लेता है; किन्तु उस भोजन के प्रति उसकी सन्मुखता नहीं है।

अहो ! परमात्मपर्याय तो मेरी परमात्मशक्ति में से निकली है। मैं पूर्णानन्द का नाथ हूँ ह्न ऐसी श्रद्धा-ज्ञान सहित वर्तनेवाला धर्मी जीव बोलते हुये भी नहीं बोलता, परद्रव्य की किसी भी क्रिया का स्वामी नहीं होता, प्रतिमा को देखते हुये भी नहीं देखता; क्योंकि 'मैं भगवान के दर्शन करूँ' ह्न ऐसे विकल्प के प्रति भी उसको सन्मुखता नहीं है। उसकी सन्मुखता तो एक ज्ञायक की ओर ही है।

आत्मा के आश्रय बिना जन्म-मरण का अन्त तीन काल में भी कभी नहीं हो सकता। साक्षात् तीर्थंकर भगवान का आश्रय लेवें तो भी जन्म-मरण का अभाव नहीं होता। निज आत्मा की भक्ति से जन्म-मरण का नाश होता है और भगवान की भक्ति से शुभभाव उत्पन्न होते हैं।

सम्मेदशिखरजी की यात्रा करने से 49 भव में मोक्ष होगा अथवा शत्रुंजय क्षेत्र में स्नान करने से भव का अभाव होगा ह्न ऐसी समस्त मान्यताएँ झूठी हैं। पूरे जीवन व्रत पाले, यात्रायें करे, तप का पालन करे; तथापि स्वभाव के आश्रय बिना मुक्ति नहीं हो सकती। मुक्ति तो बहुत दूर संवर-निर्जरा भी नहीं हो सकते।

प्रश्न : शास्त्र में अनेक जगह पर भगवान के आश्रय से मुक्ति की बात आती है। छहढाला में भी व्यवहार मोक्षमार्ग को निश्चय का कारण कहा है। तो क्या व्यवहार अर्थात् पराश्रितभाव निश्चय का कारण नहीं है ?

उत्तर : यह तो निमित्त की अपेक्षा किया गया कथन है। कार्य तो उपादान से ही होता है, परन्तु जो कार्य के होने में अनुकूल हो, उसपर निमित्तकारण के रूप में आरोप किया जाता है। घड़ा बनने में कुम्हार अनुकूल निमित्त है; किन्तु मिट्टी की पर्याय ही घड़ेरूप होती है; अत: तीनकाल और तीनलोक में कुम्हार घड़े का कर्त्ता नहीं हो सकता, यही निश्चय है।

यहाँ कहते हैं कि अन्तर में राग उत्पन्न हो तो भी धर्मी की दृष्टि ज्ञायक द्रव्य से छूटकर राग के सन्मुख नहीं होती। राग स्वयं से होता है, कर्म के कारण नहीं होता।

कर्म बिचारे कौन, भूल मेरी अधिकाई।
अग्नि सहे घनघात, लोह की संगति पाई।।

जिसप्रकार अग्नि लोहे का संग करती है तो उसे भी घन के घात (चोट) सहना पड़ते हैं, उसीप्रकार आत्मा कर्म का संग करता है, इसलिये दु:खी होता है। धर्मी को जितना राग है, उतना दु:ख है। राग है, पर उसके प्रति अभिमुखता नहीं है।

हे भाई ! यह तो न्यायमार्ग है। संत भी सर्वज्ञदेव द्वारा कहे हुये न्याय से ही बात करते है; किन्तु लोगों ने इस यथार्थ मार्ग को न समझकर उसे बिगाड़ रखा है। कोई पाँच-पच्चीस लाख के दो-तीन मन्दिर बना देवे तो जगतजन उसे धर्मपिता/धार्मिक समझ लेते है। यथार्थ मार्ग को वे लोग नहीं पहिचानते।

भाई ! स्वयोग्यता से होने वाली पर्याय में कौन फेर-फार कर सकता है ? उसमें कौन रूपांतर कर सकता है ? कौन कालांतर कर सकता है ? और कौन क्षेत्रान्तर कर सकता है ? जिस समय जो पर्याय होने योग्य है, उसे आगे-पीछे करने में इन्द्र, नरेन्द्र और जिनेन्द्र भी समर्थ नहीं है। जो हो रहा है, वह ज्ञान का ज्ञेय है; अत: उसे जान लेना चाहिये; मैं उसमें कुछ फेरफार कर सकता हूँ ह्न ऐसा नहीं समझना चाहिये।

दिगम्बर संतों की बात पूर्वापर अविरोधी होती है, उसमें किसी को कोई विरोध नहीं होता। सर्वज्ञदेव द्वारा बताये हुये मार्ग को स्पष्ट करते हुये वे कहते हैं कि ह्न स्वाश्रय से ही लाभ है, पराश्रय से कदापि लाभ नहीं हो सकता। यही बात शास्त्र में लिखी है और मुनिराज भी यही कहते हैं। यथार्थ मार्ग तथा वस्तुस्थिति भी ऐसी ही है। उसमें परस्पर कुछ भी विरोध नहीं होता। धर्मी को जितनी स्वसन्मुखता है, उतना मोक्षमार्ग है और जितनी परसन्मुखता है, उतना बंधमार्ग है। **(शेष पृष्ठ - 4 पर ..)**

आत्मा किसका कर्त्ता-भोक्ता है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के 34-35 वें श्लोक (कलश) पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

असति सति विभावे तस्य चिंतास्ति नो न:
सततमनुभवाम: शुद्धमात्मानमेकम्।
हृदयकमलसंस्थं सर्वकर्मप्रमुक्तं
न खलु न खलु मुक्तिर्नान्यथास्त्यस्ति तस्मात्।।34।।

हमारे आत्मस्वभाव में विभाव असत् होने से हमें उसकी चिंता नहीं है। हम तो हृदयकमल में स्थित, सर्वकर्म से विमुक्त, एक शुद्धात्मा को सतत् अनुभव करते हैं, कारण कि अन्य किसी प्रकार से मुक्ति नहीं है, नहीं है।

हमें शरीरादि की तो चिंता है ही नहीं, वह तो जड़ है और स्वयं के कारण से परिणमन करता है; तथा हमारे शुद्धस्वभाव में तो विभाव भी असत् है; अत: उसकी भी हमें चिंता नहीं है। हमारी दृष्टि में तो त्रिकाल शुद्धस्वभाव की ही अस्ति है और विभाव की नास्ति है। आत्मा के स्वभाव में शरीरादि तो है ही नहीं; अपितु उसमें विभाव भी नहीं है, इसलिए हमें उसकी भी चिंता नहीं है। हम तो शुद्धस्वभावी हैं, विभाव हमारे में नहीं है। जब हमारे स्वभाव में विभाव है ही नहीं तो फिर स्वभाव की एकाग्रता के काल में हमें उस विभाव को टालने की चिंता भी क्यों हो ?

शरीर, पैसा आदि की तो चिंता है ही नहीं तथा विकार भी स्वभाव में नहीं होने से उसकी भी चिंता नहीं है। **'विकार है और उसे टालूँ'** ऐसा विकल्प भी चिंता है। चूंकि हमारे शुद्ध स्वभाव में विकार है ही नहीं; अत: हमें उसकी भी चिंता नहीं। ऐसे स्वभाव को जो स्वीकार करे, उसे सम्यग्दर्शन होता है।

'त्रिकाली स्वभाव में विकार नहीं' ह्न ऐसी श्रद्धा करने पर पर्यायबुद्धि का त्याग हो जाता है, इसी का नाम मिथ्यात्व का त्याग है। यहाँ तो मुनिराज कहते हैं कि अहो ! हमारे चिदानन्द स्वभाव की अस्ति में विभाव है ही नहीं, अत: हमें

उसकी चिंता नहीं है । देखो ! स्वभावदृष्टि के बल से जिसने विभाव को असत् स्वीकार किया उसे तीव्र विभावभाव हो ही नहीं सकता । कोई चाहे जैसा तीव्र विभाव करे और कहे कि हमारे स्वभाव में विभाव नहीं है ह्न उसकी यहाँ बात नहीं है। यहाँ तो स्वभाव की दृष्टि के जोर से विकार भासित ही नहीं होता ह्न ऐसे दृष्टिवंत ज्ञानियों की बात है। उनकी पर्याय में से विकार अल्पकाल में ही टल जाता है। स्वभाव की भावना में एकाग्रता है; वहाँ विभाव दिखता ही नहीं, इसलिए विभाव है ह्न ऐसी तो चिंता ही नहीं और विभाव को टालूँ ह्न ऐसी भी चिंता नहीं; स्वभाव की ही भावना है। बाह्य में शरीरादि का क्या होगा ? संघ का और शिष्यों का क्या होगा ? ऐसी चिंता तो वहाँ है ही नहीं; परन्तु विभाव की भी चिंता नहीं है; वहाँ तो एक मात्र चैतन्य की ही भावना है।

अहो ! स्वभाव में विभाव का अभाव है, स्वभावदृष्टि में पर्यायदृष्टि ही नहीं है। स्वभावदृष्टि में विभाव असत् है, इसलिए स्वभावदृष्टि वाले को उसकी चिंता नहीं है । 'विभाव की चिंता नहीं' ऐसा नास्ति से कहा और 'विभावरहित शुद्ध आत्मा का सतत् अनुभव है' ऐसा अस्ति से कहा। हमारे हृदय कमल में सर्वमल से विमुक्त एक शुद्धात्मा विराजित है, उसी को हम सदा अनुभव करते हैं, वही मुक्ति का उपाय है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई मुक्ति का उपाय नहीं। जो भव्यजीव धर्म करना चाहते हों, वे भी अपनी आत्मा को ऐसा ही शुद्ध अनुभव करो।

अज्ञानी पर की चिंता भले ही करे; परन्तु उसमें कुछ भी फेरफार करने में समर्थ नहीं है। विकार की चिंता करने पर राग की उत्पत्ति होती है, उससे मुक्ति नहीं हो सकती; इसलिये हृदय कमल में स्थित एक शुद्धात्मा को ही हम सतत् अनुभव करते हैं।

नोकर्म, द्रव्यकर्म और भावकर्म का तो आत्मा में त्रिकाल अभाव है तथा निर्मल पर्याय भी अनेकता के भेद का अनुभव नहीं करती; अपितु स्वभाव के एकपने का ही अभिनन्दन करती है; अत: हम तो एक शुद्धात्मा को ही सतत् अनुभव करते हैं। ऐसे चैतन्यस्वभाव के अनुभव के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार से मुक्ति नहीं है।

अनुकूल निमित्तों की खोज और प्रतिकूल निमित्तों के पलायन से मुक्ति नहीं है, विकार के समक्ष देखने से भी मुक्ति नहीं है, निर्मल पर्याय के भेद पर लक्ष्य करने

से भी मुक्ति नहीं है; एकरूप शुद्ध चैतन्य आत्मा के अनुभव से ही मुक्ति है। इसलिए हम तो एक शुद्धात्मा को ही सतत् रूप से अनुभव करते हैं।

भविनि भवगुणा: स्यु: सिद्धजीवेपि नित्यं,
निजपरमगुणा: स्यु: सिद्धिसिद्धा: समस्ता: ।
व्यवहरणनयोऽयं निश्चयान्नैव सिद्धि ह्न
र्न च भवति भवो वा निर्णयोऽयं बुधानाम् ।।35।।

संसारी में सांसारिक गुण होते हैं और सिद्धजीवों में सदा समस्त सिद्धि-सिद्ध (परिपूर्ण हुए) निज परमगुण होते हैं ह्न इसप्रकार व्यवहारनय है। निश्चय से तो सिद्ध भी नहीं है और संसारी भी नहीं है। यह बुध-पुरुषों का निर्णय है।

सांसारिक गुण अर्थात् विकारी पर्यायें। निज परमगुण अर्थात् ज्ञान, आनन्द आदि पर्यायों की पूर्णता। विकार को यहाँ संसारी का गुण कहा है।

जिसप्रकार अफीम का गुण कड़वाहट है, उसप्रकार संसारी का गुण क्या है ? एकसमय पर्यंत का विकार। और सिद्धजीवों की केवलज्ञानादि पर्याय उनके परमगुण हैं ह्न इसप्रकार पर्यायें व्यवहार है। सांसारिक गुणों का काल एक समय का है और आत्मा चैतन्यमूर्ति त्रिकाल है। एकसमय के विकार को संसारी का गुण कहा और निर्मल दशा को मुक्त जीव का गुण कहा; परन्तु ऐसे पर्याय भेद को जानना व्यवहार है। निश्चय से तो द्रव्य स्वभाव में मुक्ति भी नहीं है और संसार भी नहीं है। त्रिकाल स्वभाव की अपेक्षा से एक समय की पर्याय अभूतार्थ है, इसलिये त्रिकाल स्वभाव की निश्चय दृष्टि से आत्मा को संसार या मुक्ति नहीं है। वह तो एकरूप ध्रुव आनंद कन्द है ह्न ऐसा बुध पुरुषों/ज्ञानियों का निर्णय है। यहाँ स्वभाव दृष्टिवाले को बुधपुरुष कहा है।

मुक्त पर्याय भी एकसमय की है और संसार पर्याय भी एक समय की है। यह दोनों पर्यायें व्यवहारनय का विषय है। निश्चयनय के विषय में तो एकरूप ध्रुव चैतन्य आनंदकन्द आत्मा ही है, उसमें संसार और मोक्ष जैसे भेद नहीं है। यह ज्ञानी-मुनि केवली भगवन्तों का निर्णय है। जो ऐसा निर्णय करे वही बुध पुरुष है, अन्यथा अबुध है। ●

छहढाला प्रवचन

रे जीव ! सुन, यह तेरे दुःख की कथा

दुर्लभ लहि ज्यों चिन्तामणि, त्यों पर्याय लही त्रसतणी।
लट-पिपील-अलि आदि शरीर, धर-धर मर्यो सही बहु पीर।।५।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ...)

तिर्यंचगति में धर्मप्राप्ति किसी-किसी जीव को ही होती है; भगवान की धर्मसभा में भी उपदेश सुनकर भी कोई-कोई तिर्यंच धर्म की प्राप्ति कर लेते हैं; परन्तु सामान्यतया अज्ञानदशा में यह जीव सिंहादिक क्रूर तिर्यंच होकर दूसरे निर्बल प्राणियों की चीरफाड़ करता है।

जो जीव दसवें भव में जगदुद्धारक तीर्थंकर होनेवाला है, जिसकी समीपता पाकर सिंहादिक क्रूर जीव भी अपना हिंसकपना छोड़ देंगे ह्न ऐसे होनहार तीर्थंकर का जीव भी अज्ञानदशा में सिंह होकर हिरन को मार रहा था। ऐसे क्रूर पापपरिणामों से छूटकर आत्मा का हित करने के लिए यह उपदेश है। कैसे परिणामों से तुम संसार में दुःखी हुए और अब क्या करने से सुखी हो सकते हो ? ह्न इसका उपाय श्रीगुरु ने वीतराग-विज्ञानता बताया है।

अनन्तबार पंचेन्द्रिय होकर भी इस जीव ने अज्ञानवश ऐसे क्रूर काम किये हैं, कि जिसे देखकर दूसरे का भी दिल काँप उठे।

एकबार एक राजा शिकार खेलने गया; साथ में एक बनिये-सेठ को भी ले गया। जंगल में एक भैंसा बँधा हुआ था और सिंह उसे फाड़कर खा रहा था। यह देखते ही सेठ ने कहा ह्न अरे रे ! मुझसे यह देखा नहीं जाता। तब राजा ने कहा ह्न अरे ! तुम बनिये लोग डरपोक होते हो, हम तो शूरवीर क्षत्रिय हैं। ऐसे क्षत्रिय निष्ठुर परिणामवाले जीव नरक में न जायेंगे तो और कहाँ जायेंगे? उन्हें अभी नरक की असह्य पीड़ा का भान नहीं है। जब नरक में जायेंगे तब स्वयं ही भोगेंगे, उसे तो भगवान ही जानते हैं। वहाँ उनकी पुकार सुननेवाला कोई नहीं होगा। अरे ! पाप करते समय जीव अन्धा हो जाता है, वह पाप के फल का विचार नहीं करता;

किन्तु जब फल भोगना पड़ेगा, तब असह्य दुःख होगा।

भाई ! यह प्रकरण तो तिर्यंच गति के दुःखों का चल रहा है। यह जीव कभी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच भी हुआ, तो भी इसने घोर क्रूर परिणाम किये। उन परिणामों में आत्मा के विचार का अवकाश ही न रहा। एकबार एक बड़े अजगर ने बाघ को अपनी लपेट में लेकर भींच डाला; अजगर की लपेट से छूटने के लिए बाघ घण्टों तक छटपटाया; किन्तु अन्त में मर गया। बड़ा मच्छ छोटे मच्छ को खा जाता है। अरे ! जब मनुष्य ही मनुष्य को निर्दयरूप से मार डालता है तो फिर पशुओं की क्या बात करें ? कुत्ती अपने बच्चों को जन्म देकर फिर स्वयं ही उनको खा जाती है। कैसी क्रूरता है ? ऐसे क्रूर परिणाम इस जीव ने बहुतबार किये। कभी स्वयं बलवान हुआ, तब अन्य निर्बल पशुओं को मारकर खाया और कभी स्वयं बलहीन हुआ, तब दूसरे बलवान पशुओं के द्वारा खाया गया; यह बात आगे के छन्द में कहेंगे।

संसार में जीवों का जीवन-मरण अपनी-अपनी आयु के अनुसार ही होता है। कोई दूसरा उनको न मार सकता है, न जिला सकता है; किन्तु यहाँ जीव का परिणाम कैसा है ? यह दिखाना है।

हे जीव ! संसार में तू कैसे-कैसे परिणामों से दुःखी हो रहा है ? यह जानकर अब उनका सेवन छोड़। पाप और पाप का फल जानकर उनसे विरक्त हो। तू अपने स्वरूप को भूल गया, इसलिये यह परिभ्रमण हो रहा है। इसे मिटाने के लिए लाखों उद्यम करके भी सम्यक्त्व प्रगट कर ! ऐसा श्रीगुरु का करुणापूर्वक उपदेश है।

मिथ्यात्वादि के सेवन से संसार की चारों गतियों में जीव अनन्त दुःख भोगते हैं। उन दुःखों को दिखाकर उनसे बचने का उपाय बताते हुये सन्तों ने वीतराग-विज्ञान का उपदेश दिया है। तिर्यंचपने में जीव ने कैसे-कैसे दुःख सहन किये? उनका यह कथन चल रहा है।

कबहूँ आप भयो बलहीन सबलनि करि खायो अति दीन।
छेदन-भेदन-भूख-पियास भारवहन-हिम-आतप त्रास ।।७।।

जब जीव स्वयं सिंहादिक बलवान पशु हुआ, तब उसने अन्य निर्बल प्राणियों को क्रूरता से मारकर खाया और जब स्वयं निर्बल पशु हुआ, तब अन्य बलवान पशु द्वारा खाया गया। **(शेष पृष्ठ - 29 पर)**

संक्षिप्त समाचार

✻ **मुम्बई :** एयर सहारा का नया नाम 'जेट लाइट' होगा। जेट एयरवेज के चेयरमेन नरेश गोयल के अनुसार यह कम किरायेवाली विमान सेवा होगी।

✻ **नई दिल्ली :** सुप्रीम कोर्ट में केन्द्र सरकार ने ओबीसी आरक्षण पर रोक लगाने के खिलाफ एक 'संशोधित' याचिका दायर की; ताकि ओबीसी को आरक्षण इसी सत्र से लागू हो सके।

✻ **इन्दौर :** दिनांक 15 अप्रैल 2007 को नेहरू स्टेडियम, इन्दौर में संगीतकार हृदयनाथ मंगेशकर को लता मंगेशकर पुरस्कार प्रदान किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें एक लाख रुपये, शॉल, श्रीफल एवं सम्मानपट्टिका भेंट की गई।

✻ केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने आजादी के आन्दोलन में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के योगदान को लेकर यू-टर्न ले लिया है। अब, मंत्रालय ने साफ किया है कि आजादी की जंग में नेताजी का योगदान 'असीमित' था।

✻ राजस्थान के शिक्षामंत्री घनश्याम तिवाडी ने कहा है कि **विश्व का पहिला** होम्योपैथी विश्वविद्यालय राजस्थान में खोला जायेगा। निजी क्षेत्र में स्थापित होनेवाले होम्योपैथी विश्वविद्यालय के लिये राज्य सरकार ने आशय पत्र जारी कर दिया है।

✻ **नई दिल्ली :** आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन राज्य मंत्री कुमारी शैलजा संयुक्त राष्ट्र हेबीटैट की संचालन परिषद की अध्यक्ष चुनी गई हैं। उन्हें दो वर्ष के लिये चुना गया है।

उपराष्ट्रपति शेखावत की करुणा

धर्मस्थल (कर्नाटक) : उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत शनिवार, दिनांक 14 अप्रैल को कर्नाटक के प्रसिद्ध जैन तीर्थक्षेत्र धर्मस्थल गये। विकलांगों के लिये चलाये जा रहे कल्याण कार्यक्रम को देखकर उनका हृदय करुणा से भर गया, वे इतने द्रवित हो उठे कि निजी तौर पर विकलांगों के कल्याण के लिये एक लाख रुपये का चैक प्रदान किया। ज्ञातव्य है कि वे कर्नाटक यात्रा के दौरान धर्मस्थल का दौरा करने गये थे।

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द सम्पन्न

१.खडैरी (दमोह-म.प्र.) : यहाँ श्री अ. भा. जैन युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन के तत्त्वावधान में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर ६४ ऋद्धि विधान का आयोजन हुआ।

प्रतिदिन प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् दोपहर में पण्डित नरोत्तमदासजी शास्त्री के विधान की जयमाला एवं रात्रि में पण्डित ताराचन्दजी जैन के समयसार पर सारगर्भित प्रवचन हुए। प्रवचनोपरान्त रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन स्थानीय विद्वान पण्डित भानुजी शास्त्री, पण्डित चेतनजी शास्त्री एवं श्री दिनेशजी जैन ने सम्पन्न कराये।

कार्यक्रम में जैन युवा शास्त्री परिषद के सदस्यों का सहयोग रहा। **ह्न चैतन्य शास्त्री**

२. दिल्ली : यहाँ **सैनिकफार्म** स्थित जैन मंदिर में श्री सिद्धचक्र विधान का आयोजन हुआ। इस प्रसंग पर पण्डित राकेशजी शास्त्री के विधान की जयमाला पर प्रवचन हुये।

दिल्ली के ही अन्य उपनगर **लारेंस रोड** स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर केशवपुरम् में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ। विधान के सम्पूर्ण कार्य विधानाचार्य पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा एवं पण्डित अमितजी शास्त्री लुकवासा के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

शिवाजी पार्क स्थित जैन मन्दिर में पण्डित धनसिंहजी जैन पिड़ावा के निर्देशन में श्री सिद्धचक्र विधान आयोजित हुआ। तथा आपके ही प्रवचनों का लाभ मिला।

३. मंगलायतन (अलीगढ़) : यहाँ पर्व के अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. मानमलजी जैन कोटा के नियमसार के शुद्धभाव अधिकार पर सारगर्भित प्रवचन हुये। आपके अतिरिक्त पण्डित राकेशजी शास्त्री द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर शिक्षण कक्षा एवं पण्डित देवेन्द्रजी जैन द्वारा सैंतालीस शक्तियों तथा समयसार गाथा ३२० पर प्रवचन हुये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

05 से 07 मई, 07	देवलाली	मुमुक्षु व विद्वत् सम्मेलन
08 से 25 मई, 07	देवलाली	प्रशिक्षण-शिविर
31 मई से 06 जून, 07	लंदन	धर्मप्रचारार्थ
07 जून से 22 जुलाई, 07	अमेरिका	धर्मप्रचारार्थ
03 से 12 अगस्त,07	जयपुर	शिक्षण-शिविर
08 से 15 सितम्बर, 07	मुम्बई (भारतीय विद्याभवन)	श्वेताम्बर पर्यूषण
16 से 26 सितम्बर, 07	मुम्बई (भारतीय विद्याभवन)	दशलक्षण महापर्व
17 से 26 अक्टूबर, 07	जयपुर	शिक्षण शिविर

ग्रीष्म-अवकाश में बालकों हेतु विशेष कक्षायें

यदि आप अपने बालकों के ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग करना चाहते हैं, उन्हें धार्मिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिक आचार-व्यवहार का ज्ञान दिलाना चाहते हैं, तो **देवलाली (नासिक-महा.) में दिनांक ८ से २५ मई, २००७ तक** में आयोजित होनेवाले शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

इस शिविर में प्रतिदिन युवा व किशोर वर्ग हेतु जैन दर्शन की विश्व व्यवस्था व वैज्ञानिकता तथा जैनदर्शन की जीवन में उपयोगिया विषय पर कक्षा का आयोजन किया जायेगा।

साथ ही बाल वर्ग हेतु तीनों समय विभिन्न बाल विषयों पर भी कक्षाओं का आयोजन किया जायेगा। उनके व्यक्तित्व विकास आदि की कक्षाएँ भी आयोजित की जायेंगी।

बालकों के मनोरंजन हेतु रात्रि में धार्मिक कविताएँ, नाटक, चित्रकला, प्रश्नमंच आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होंगे, जिसमें सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का मौका मिलेगा।

सभी कक्षाएँ बाल मनोविज्ञान की विशेषज्ञा **डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई** के निर्देशन में विभिन्न अध्यापकों द्वारा संचालित की जायेगी।

ज्ञातव्य है कि बालकों के लिये जैन के.जी. व जैन जी. के. (भाग 4) की सफलता के पश्चात् अब डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा लिखित जैन जी.के. भाग-5 एवं 6, जैन कलर बुक तथा 'मुझमें भी एक दशानन रहता है' नामक कृतियों का शीघ्र प्रकाशन हो रहा है।

ह्न प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. जैन शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष नियुक्त

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक छात्र डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन, जयपुर को राजस्थान विश्वविद्यालय से संबंधित वसुन्धरा महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय अचरोल (जयपुर) में शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया है।

ज्ञातव्य है कि डॉ. जैन शिक्षा के क्षेत्र में पिछले पाँच वर्षों से ज्ञान की नई अलख जगा रहे है एवं वर्तमान में बी.एड. और एम.एड. के विद्यार्थियों को अध्यापन कार्य कराते हैं।

आपको वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

षष्ठम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ श्री परमागम मंदिर का षष्ठम वार्षिकोत्सव श्री नेमीचन्दजी पहाड़िया परिवार पीसांगन के प्रमुख आयोजकत्व में दिनांक ९ से ११ फरवरी, २००७ तक हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रतिदिन प्रात: योगसार मण्डल विधान के पश्चात् प्रवचन, रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति, प्रवचन एवं प्रश्नमंच आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

इस प्रसंग पर वाणीभूषण पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा, बाल ब्र. हेमन्तभाईजी गाँधी सोनगढ़, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा, पण्डित विमलचंदजी पाटनी ग्वालियर, पण्डित लालजीरामजी विदिशा, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित पूरनचंदजी मौ, पण्डित केशरीमलजी पाटनी ग्वालियर, श्री बसंतजी बड़जात्या ग्वालियर एवं डॉ. मुकेशजी तन्मय शास्त्री आदि का सान्निध्य प्राप्त हुआ। दिनांक १२ फरवरी को नवनिर्मित श्री कुन्दकुन्द द्वार का उद्घाटन किया गया।

(पृष्ठ-25 का शेष...)

बलवानों के सामने अपना जोर नहीं चला; अतः अत्यन्त दीनता से उनका भक्ष्य बन गया। बेचारा छोटा-सा खरगोश या बकरी का बच्चा बड़े सिंह के मुख में फँसा हो, वह कैसा दीन होकर मरता है ? कोई कसाई उसे छुरे से काट डाले, खाने-पीने को नहीं मिले, असह्य बोझ उठाना पड़े और बहुत शीत या गर्मी का त्रास सहन करना पड़े; इसप्रकार दु:खपूर्वक भव पूरा किये।

उसमें यदि किसी जीव की पात्रता हो तो उसे भगवान या मुनि आदि का धर्मोपदेश मिल जाये और वह धर्मप्राप्ति कर ले; परन्तु यहाँ तो अज्ञान से सहन किये गये दु:खों का वर्णन चल रहा हैं। जिसने आत्मा का ज्ञान किया; वह तो मोक्षमार्गी हो चुका, वह तो अब आनन्द का अनुभव करता हुआ मोक्ष को साधेगा। चारों गतियों में जितने भी धर्मात्मा जीव हैं, उन पर ये दु:खों का वर्णन लागू नहीं होता; क्योंकि यह तो मिथ्यात्व से होने वाले दु:ख की कथा है।

धर्मी जीव भी धर्म प्रकट होने के पहले अज्ञानदशा में ऐसे दु:ख भोग चुके हैं; परन्तु वर्तमान में तो सम्यक्त्वादि प्रगट होने से सुख के पथ में लगे हैं। अब तो वे जिनेश्वरदेव के लघुनन्दन हैं, उनकी बलिहारी है, धन्यता है। वे दु:खहारी और सुखकारी ह्न ऐसे वीतराग-विज्ञान के द्वारा सिद्धपद को साध रहे हैं। ●

एक साथ पाँच-पाँच शिलान्यास

खेकड़ा (उ.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तेरहपंथ स्वाध्याय भवन ट्रस्ट द्वारा श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर के पास क्रय की गई जमीन पर एक साथ 5 शिलान्यास किये गये। द्वि-दिवसीय आयोजन में दिनांक 10 मार्च को श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन हुआ।

11 मार्च को **श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन** का शिलान्यास श्री सौराजजी-अमितजी खेकड़ा परिवार द्वारा, **श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला कक्ष** का शिलान्यास श्री सुमतप्रसाद-विनोदकुमार जैन परिवार बड़ौत द्वारा, **समाधि कक्ष** का शिलान्यास श्री सुभाषचंद-सुरेशचन्द-वकीलचन्द जैन परिवार नांगलोई-दिल्ली द्वारा, **ब्रह्मी आश्रम कक्ष** का शिलान्यास ब्र.बहन शोभाजी एवं उनके परिवार तथा प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर परिवार द्वारा, **सुन्दरी ब्रह्मचर्याश्रम कक्ष** का शिलान्यास ब्र.विनोदजी कांधला परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर, पण्डित राकेशजी शास्त्री नांगलोई, पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली एवं पण्डित कल्पेन्द्रजी खतौली के दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद एवं उनके सहयोगी पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर के निर्देशन में सम्पन्न हुई।

कार्यक्रम में सहारनपुर, बड़ौत, खतौली, मेरठ, कांधला, बागपत, दिल्ली आदि स्थानों के प्रतिष्ठित महानुभावों ने लाभ लिया।

विधान एवं शिलान्यास सम्पन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन समिति, कोहेफिजा के तत्त्वावधान में १५ से १८ मार्च तक नवलब्धि विधान एवं श्री महावीर भवन के शिलान्यास का आयोजन हुआ।

१८ मार्च को शिलान्यास समारोह माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंहजी चौहान एवं भोपाल के महापौर श्री सुनील सूद की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। शिलान्यासकर्त्ता श्री महेन्द्र जैन, सुनील जैन सुपुत्र श्रीमती बदामीदेवी परिवार थे।

समस्त कार्यक्रम तीर्थधाम मंगलायतन के सहयोग से बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ द्वारा सम्पन्न कराये गये।

आयोजन में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा एवं डॉ. कपूरचन्दजी कौशल भोपाल के आध्यात्मिक प्रवचनों से लगभग १००० लोग लाभान्वित हुये। **ह्न महेन्द्र चौधरी**

ज्ञायक भाव प्रबोधनी टीका - सहज बालबोधनी

बांसवाड़ा से पण्डित राजकुमारजी शास्त्री लिखते हैं कि – 'गूढतम रहस्यों को सहज-सरल-सरस शैली में प्रस्तुत करनेवाले ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा परमपूज्य आचार्य कुन्दकुन्ददेव विरचित समयसार परमागम पर लिखित **ज्ञायकभाव प्रबोधनी** नामक टीका वस्तुत: समयसार की सहज बालबोधनी टीका है।

वर्षों तक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के हार्द को सुनकर वर्षों तक सुनाकर-लिखकर **जीवन हो जावे समयसार की भावना भाकर** आपके द्वारा प्रस्तुत यह टीका आपके अन्य साहित्य की भाँति, सभी पाठकों को पसन्द आयेगी एवं समयसार ग्रंथाधिराज को हृदयंगम कराने में सक्षम बनेगी।

इस टीका में आचार्य अमृतचन्द्र की टीका का अनुवाद भी अत्यन्त सहजग्राह्य हो गया है। साथ ही जयसेनाचार्य की टीका में स्वीकृत गाथाओं का संकलन भी इस टीका की विशेषता है। टीकाकार ने आवश्यकतानुसार उदाहरणों का भी प्रयोग किया है, जो विषय को समझने में सहायक है। तथा परिशिष्ट में ४७ शक्तियों की विशद व विस्तृत विवेचना भी पठनीय है। ग्रन्थ का बाइंडिग एवं मुद्रण कार्य उत्तम है।'

बैंकॉक में दिग. जैन मंदिर

बैंकॉक (थाईलैण्ड): हमें यह बताते हुए अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि श्री दि. जैन समाज बैंकॉक द्वारा हाऊस नं. 143/3 के. बिल्डिंग अपार्टमेन्ट के पास, सोई 45, चेरियन क्रंग रोड़, बैंकॉक में तीन मंजिला भव्य 1008 महावीर दि. जैन मंदिर का निर्माण हुआ है।

यह थाईलैण्ड में जैन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए एक नींव का पत्थर है। वेदी और प्रार्थना सभा दूसरी मंजिल पर स्थित है।

अब तक दिगम्बर एवं श्वेताम्बर के सभी कार्यक्रम एक साथ सम्पन्न होते थे। प्रतिमा भी श्वेताम्बर विधि से स्थापित थी; किन्तु वहाँ की दिगम्बर जैन समाज को एक वीतरागी प्रतिमा की जरुरत महसूस हुई और इस मंदिर का निर्माण हुआ। बैंकॉक में 450 जैन घर हैं, जिसमें 70-80 दिगम्बर परिवार हैं।

मंदिर निर्माण से वहाँ की सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रही है। **ह्न प्रमोद एम. जैन**

जैन पत्र सम्पादक सम्मेलन सम्पन्न

श्री महावीरजी (राज.) : यहाँ दिनांक १ मार्च ०७ को प्रात: ७ बजे समन्वय वाणी जिनागम शोध संस्थान, जयपुर द्वारा आयोजित जैन पत्र सम्पादक सम्मेलन डॉ. रमेश जैन (नेत्र विशेषज्ञ) निवाई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि श्री अनूपचन्द एडवोकेट फिरोजाबाद तथा विशिष्ट अतिथि इन्दिरा प्रियदर्शनी अवार्ड से सम्मानित युवा उद्यमी श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल जयपुर थे।

समारोह का शुभारंभ प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रमेश तिजारिया जयपुर द्वारा द्वीप प्रज्वलन व डॉ. महेन्द्र जैन 'मनुज' इन्दौर के मंगलाचरण से हुआ। वक्ताओं में सिद्धान्तसूरि पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, वरिष्ठ पत्रकार श्री मिलापचन्द डण्डिया, श्री प्रवीणचन्द छाबड़ा, डॉ. संजीव भानावत, डॉ. भागचन्द 'भागेन्दु' एवं डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा थे। सभा का संचालन समन्वय वाणी के सम्पादक श्री अखिल बंसल ने किया।

अपरान्ह ३ बजे दिगम्बर जैन महासमिति पत्रिका के सम्पादक श्री महेन्द्रकुमार पाटनी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई बैठक में श्री अखिल बंसल को संयोजक मनोनीत कर उन्हें तदर्थ समिति गठित करने का अधिकार दिया गया। उपस्थित ३१ सदस्यों में जो ११०० रुपये प्रदान करेंगे, उन्हें संस्था का संस्थापक सदस्य बनाने की घोषणा की गई। डॉ. रमेशजी निवाई ने 'जैन पत्र सम्पादक कल्याण कोष' बनाने हेतु ५१०० रुपये प्रदान किए।

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उन्हीं के शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री भी कुछ वर्षों से धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका कार्यक्रम निम्नानुसार है –

30 मई से 4 जून – **शिकागो**, 5 से 10 जून – **बोस्टन**, 11 से 17 जून – **डलास**, 18 से 24 जून – **मियामी**, 25 से 30 जून – **टोरन्टो**, 1 से 8 जुलाई – **न्यूजर्सी**, 9 से 15 जुलाई – **सान् फ्रांसिस्को**, 16 से 21 जुलाई – **क्लीवलैण्ड**। ये उन्हीं स्थानों पर रुकेंगे, जहाँ डॉ. भारिल्ल रुकेंगे। बोस्टन में राजीव ए. जैन – 484-716-8801, टोरन्टो में रीमा अग्रवाल/संजय जैन – 905-686-5245 तथा क्लीवलैंड में कुशल बैद – 440-339-9519

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित ह्न

४१वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, देवलाली में

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित ४१वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष मंगलवार, दिनांक ८ मई से शुक्रवार, २५ मई २००७ तक देवलाली-नासिक (महा.) में होना निश्चित हुआ है। इस शिविर में मुख्यरूप से धार्मिक अध्ययन करानेवाले बन्धुओं (अध्यापकों) एवं मुमुक्षु भाईयों को शिक्षण-प्रशिक्षण विधि से प्रशिक्षित किया जायेगा।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित राजेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, ब्र. हेमचन्दजी हेम, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर आदि के प्रवचनों और कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

साथ ही शिक्षण-प्रशिक्षण में सहयोग देनेवाले अनेक प्रशिक्षित अध्यापक भी पधारेंगे, जिनके द्वारा बालकों, प्रौढ़ों और महिलाओं के लिये शिक्षण-कक्षायें आयोजित होंगी।

बालबोध-प्रशिक्षण में प्रवेश पाने के लिये बालबोध भाग – १, २, ३ की तथा प्रवेशिका-प्रशिक्षण में प्रवेश पाने के लिये वीतराग-विज्ञान भाग –१, २, ३ की प्रवेश प्रतियोगितात्मक लिखित परीक्षा दि. ७ मई, दोपहर २ बजे देवलाली में ली जावेगी, जिसमें प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा; अत: प्रवेशार्थी उक्त पुस्तकों की पूरी तैयारी करके आवें।

ध्यान रहे, प्रवेशिका प्रशिक्षण में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा, जो बालबोध प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। आपके यहाँ से कितने भाई-बहिन शिविर में पधार रहे हैं, इसकी सूचना निम्नांकित पतों पर अवश्य भेजें; ताकि आपके आवास एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

देवलाली का पता ह्न

पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट,
कहाननगर, लामरोड,
देवलाली-नासिक (महा)
फोन: 0253-2492278,2491044

ह्न जयपुर का पता

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल,
श्री टोडरमल स्मारक भवन,
ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)
फोन : 0141-2707458, 2705581

डॉ. भारिल्ल का 2007 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 24 वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्नस्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन एवं फैक्स नं.दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	लंदन	**Bhimji Bhai Shah 192-384-0833** **bhimji@hevika.com**	30 मई से 6 जून
2.	सान् फ्रांसिस्को	**Ashok Sethi (R) 408-517-0975** **ashok_k_sethi@yahoo.com** **Vikas Jain 903-366-6524** **vikasnd@gmail.com**	7 से 13 जून
3.	लॉसएंजिल्स	**Naresh Palkhiwala** **(R) 562-404-1729** **(O) 626-814-8425 ext.8725** **naresh.palkhiwala@westcov.org**	14 से 20 जून
4.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088** **Bipin Bhayani (O) 815-939-3190** **(R) 815-939-0056 (F) 815-939-3159**	21 से 30 जून
5.	न्यूजर्सी	**Atul Khara (R) 972-867-6535** **(O) 972-424-4902 (F) 972-424-0680** **E-mail : insty@verizon.net**	1 से 7 जुलाई
6.	वाशिंगटन डी.सी.	**Narendra Jain (R) 703-426-4004** **E-mail : jainnarendra@hotmail** **(F) 703-321-7744**	8 से 11 जुलाई
7.	मियामी	**Mahendra Shah (R) 305-595-3833** **(O) 305-371-2149** **E-mail : bhitap@bellsouth.net**	12 से 17 जुलाई
8.	डलास	**Atul Khara (R) 972-867-6535** **(O) 972-424-4902 (F) 972-424-0680** **E-mail : insty@verizon.net**	18 से 22 जुलाई